Bhishma School of Indian Knowledge System

MA Course

संस्कृतभाषा परिचय

Lecture 18 – 07.11.2023

- Harshada Sawarkar

sawarkar.harshada123@gmail.com

-: वर्णमाला / मातृकापाठ:-

स्वरा: - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऋ लृ Vowels ए ऐ ओ औ

 व्यञ्जनानि क् ख् ग् घ् ङ्

 Consonants
 च् छ् ज् झ् ञ्

 ट् ठ् ड् ढ् ण्

 त् थ् द् ध् न्

 प् फ् ब् भ् म्

य्र्ल्व्श्ष्स्ह्

```
कठोर वर्ण (Hard consonants) -
मृदू वर्ण (Soft Consonants) -
ग् घ् ङ् ज् झ् ञ् ड् ढ् ण् द् ध् न्
अनुनासिक (Nasals) -
```

ङ ञ ण न म

विसर्गसन्धि

1. पदान्त में आनेवाला विसर्ग कब स्थिर रहता है?

वाक्य में अन्तिम पद विसर्गान्त होने से -

उदा. फलं खादति राम: ।

विसर्गयुक्त पद के आगे क, ख, प, फ से आरम्भ होने वाला पद आने से -

उदा. जनक: करोति। बालक: खादित। देवदत्त: पचित। राम: फलं खादित।

भो: इस अव्यय के बाद कठोर व्यंजन आने से -

उदा. भो: चारुदत्त, कुत्र गच्छिस ? भो: केशव, पाहि माम्।

2. पदान्त के विसर्ग का लोप कब होता है ?

स: या एष: इन पदों के बाद अ के अलावा कोई भी वर्ण आने पर पहले पद के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. स मनुष्य:। स बाल:। स आगच्छति। एष उपविशति।

पदान्त में अ: और अगले पद के आरम्भ में अ के अलावा कोई भी स्वर आने पर पहले पद के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. नृप इच्छति। पुत्र आगच्छति।

पदान्त में आ: और अगले पद के आरम्भ में स्वर अथवा मृद् व्यंजन होने पर पहले पद के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. बाला धावन्ति । खगा उड्डयन्ते । मनुष्या इच्छन्ति ।

भो: अव्यय के आगे कोई भी स्वर / मृद् व्यंजन आने पर भो: के विसर्ग का लोप होता है -

उदा. भो भो: पान्था: । भो भो जना: ।

भो भो: सेवका:।

3. पदान्त के अ: का ओ होता है -

पूर्वपद के अन्त में अ: और अगले पद के आरंभ में अ अथवा मृद् व्यंजन आने पर अ: का ओ होता है। और इस ओ के आगे अ आया हो तो उसके बदले अवग्रह चिह्न (5) लिखा जाता है।

उदा. कृष्णो वदति। रामो जयति।

कोऽपि।

सोऽपि।

गजो मृतोऽस्ति।

4. पूर्वपद के अन्त में विसर्ग और अगले पद के आरंभ में च्, छ् आने पर विसर्ग का श् होता है -

पूर्वपद के अन्त में विसर्ग और अगले पद के आरंभ में ट्, ठ् आने पर विसर्ग का ष् होता है -

पूर्वपद के अन्त में विसर्ग और अगले पद के आरंभ में त्, थ् आने पर विसर्ग का स् होता है -

पूर्ण: चन्द्र: - पूर्णश्चन्द्र: । उदा.

पाण्डवा: च – पाण्डवाश्च ।

राम: टीकते – रामष्टीकते।

अश्व: तिष्ठति – अश्वस्तिष्ठति ।

5. विसर्गान्त पद के आगे श्, ष्, स् से आरंभ होनेवाला पद आने पर विसर्ग स्थिर रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर अनुक्रम से श्, ष्, स् वर्ण आते हैं -

उदा. हरि: शेते – हरिश्शेते पाठ: षोडश: - पाठष्षोडश: ध्येय: सदा – ध्येयस्सदा

6. पदान्त के विसर्ग से पहले अ, आ के अलावा स्वर होने से और आगे के पद के आरम्भ में स्वर अथवा मृद् व्यंजन होने पर विसर्ग का परिवर्तन र् में होता है -

उदा. हरि: अवदत् – हरिरवदत् धेनु: गच्छति – धेनुर्गच्छति

कतिपयै: दिवसै: एव – कतिपयैर्दिवसैरेव

पिछले नियम के अनुसार जहाँ विसर्ग का र्होता है, वहाँ अगला पद यदि र इस मृदू व्यंजन से आरम्भ होनेवाला हो तो उस पूर्व र्का लोप होता है और उस लोप होनेवाले र्से पहले यदि कोई हस्व स्वर है, तो वह दीर्घ में परिवर्तित होता है -

उदा. साधु: रमते – साधू रमते जनै: रक्षित: - जनै रक्षित:

पुन: रमते — पुना रमते हिर: राजते — हरी राजते

Some Consonant ending words - व्यञ्जनान्त नाम

त्-कारान्त – मरुत् (पुं) – विद्युत् (स्त्री) – जगत् (नपुं) – Nouns

महत् (पुं) – महत् (नपुं) – महती (स्त्री) Like नदी – Adjectives

भगवत् (पुं) – धनवत् (नपुं) – भगवती – धनवती (स्त्री) Like नदी – Adjectives

भवत् (पुं) – भवती (स्त्री) Like नदी – Pronoun सर्वनाम

सत् / गच्छत् (पुं) – सती / गच्छती (स्त्री) Like नदी – Participle

Some Consonant ending words - व्यञ्जनान्त नाम

द्-कारान्त – सहद् (पुं) – शरद् (स्त्री)

ध्-कारान्त – क्षुध् (स्त्री)

स्-कारान्त – चन्द्रमस् (पुं) – पयस् (नपुं) / आयुस् (नपुं) – उषस् (स्त्री) (Like चन्द्रमस्)

श्रेयस् (पुं) – श्रेयसी (स्त्री) – Adjective

च्-कारान्त – वाच् (स्त्री)

ज्-कारान्त – स्रज् (स्त्री)

Some Consonant ending words - व्यञ्जनान्त नाम

श्-कारान्त – दिश् (स्त्री)

इन्नन्त – शिशन् (पुं) – मनोहारिन् (नपुं)

न्-कारान्त – आत्मन् (पुं) – कर्मन् (नपुं) / नामन् (नपुं) – सीमन् (स्त्री)

राजन् (पुं)

मरुत् – त्-कारान्त पुंलिंगी – Wind (भूभृत्, दिनकृत्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
मरुत् – मरुद्	मरुतौ	मरुत:	Nominative प्रथमा
मरुतम्	मरुतौ	मरुत:	Accusative द्वितीया
मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्धि:	Instrumental तृतीया
मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्य:	Dative चतुर्थी
मरुत:	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
मरुत:	मरुतो:	मरुताम्	Genitive षष्ठी
मरुति	मरुतो:	मरुत्सु	Locative सप्तमी
हे मरुत् – मरुद्	मरुतौ	मरुत:	Vocative संबोधन

विद्युत् – त्-कारान्त स्त्रीलिंगी – Lightening (सरित्, योषित्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
विद्युत् – विद्युद्	विद्युतौ	विद्युत:	Nominative प्रथमा
विद्युतम्	विद्युतौ	विद्युत:	Accusative द्वितीया
विद्युता	विद्युद्भ्याम्	विद्युद्धिः	Instrumental तृतीया
विद्युते	विद्युद्भ्याम्	विद्युद्भ्य:	Dative चतुर्थी
विद्युत:	विद्युद्भ्याम्	विद्युद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
विद्युत:	विद्युतो:	विद्युताम्	Genitive षष्ठी
विद्युति	विद्युतो:	विद्युत्सु	Locative सप्तमी
हे विद्युत् – विद्युद्	हे विद्युतौ	हे विद्युत:	Vocative संबोधन

जगत् – त्-कारान्त नपुंसकलिंगी – World (वियत्, बृहत्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
जगत्	जगती	जगन्ति	Nominative प्रथमा
जगत्	जगती	जगन्ति	Accusative द्वितीया
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्धि:	Instrumental तृतीया
जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्य:	Dative चतुर्थी
जगत:	जगद्भ्याम्	जगद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
जगत:	जगतो:	जगताम्	Genitive षष्ठी
जगति	जगतो:	जगत्सु	Locative सप्तमी
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	Vocative संबोधन

महत् – त्-कारान्त विशेषण – पुंलिंगी - Big

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
महान्	महान्तौ	महान्त:	Nominative प्रथमा
महान्तम्	महान्तौ	महत:	Accusative द्वितीया
महता	महद्भ्याम्	महद्भि:	Instrumental तृतीया
महते	महद्भ्याम्	महद्भ्य:	Dative चतुर्थी
महत:	महद्भ्याम्	महद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
महत:	महतो:	महताम्	Genitive षष्ठी
महति	महतो:	महत्सु	Locative सप्तमी
महन्	महान्तौ	महान्त:	Vocative संबोधन

महत् – त्-कारान्त विशेषण – नपुंसकलिंगी - Big

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
महत्	महती	महान्ति	Nominative प्रथमा
महत्	महती	महान्ति	Accusative द्वितीया
महता	महद्भ्याम्	महद्भि:	Instrumental तृतीया
महते	महद्भ्याम्	महद्भ्य:	Dative चतुर्थी
महत:	महद्भ्याम्	महद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
महत:	महतो:	महताम्	Genitive षष्ठी
महति	महतो:	महत्सु	Locative सप्तमी
महत्	महती	महान्ति	Vocative संबोधन

भगवत् – वत्-प्रत्ययान्त पुंलिंगी – Lustrous (हनुमत्, बुद्धिमत्, धीमत्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्त:	Nominative प्रथमा
भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवत:	Accusative द्वितीया
भगवता	भगवद्भ्याम्	भगविद्ध:	Instrumental तृतीया
भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्य:	Dative चतुर्थी
भगवत:	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
भगवत:	भगवतो:	भगवताम्	Genitive षष्ठी
भगवति	भगवतो:	भगवत्सु	Locative सप्तमी
हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्त:	Vocative संबोधन

भवत् – त्-कारान्त पुंलिंगी सर्वनाम – You

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
भवान्	भवन्तौ	भवन्त:	Nominative प्रथमा
भवन्तम्	भवन्तौ	भवत:	Accusative द्वितीया
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्धि:	Instrumental तृतीया
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:	Dative चतुर्थी
भवत:	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:	Ablative पञ्चमी
भवत:	भवतो:	भवताम्	Genitive षष्ठी
भवति	भवतो:	भवत्सु	Locative सप्तमी
हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्त:	Vocative संबोधन

राजन् – अन्नन्त पुंलिंगी – King (मूर्धन्, ग्रावन्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
राजा	राजानौ	राजान:	Nominative प्रथमा
राजानम्	राजानौ	राज्ञ:	Accusative द्वितीया
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:	Instrumental तृतीया
राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:	Dative चतुर्थी
राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:	Ablative पञ्चमी
राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्	Genitive षष्ठी
राज्ञि	राज्ञो:	राजसु	Locative सप्तमी
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजान:	Vocative संबोधन

आत्मन् – अन्नन्त पुंलिंगी – Atma, Self (अध्वन्, यज्वन्, अश्मन्, ब्रह्मन्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
आत्मा	आत्मानौ	आत्मान:	Nominative प्रथमा
आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मन:	Accusative द्वितीया
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभि:	Instrumental तृतीया
आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य:	Dative चतुर्थी
आत्मन:	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य:	Ablative पञ्चमी
आत्मन:	आत्मनोः	आत्मनाम्	Genitive षष्ठी
आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु	Locative सप्तमी
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मान:	Vocative संबोधन

शशिन् – इन्नन्त पुंलिंगी – Moon (हस्तिन्, श्रेष्ठिन्, प्राणिन्, विटपिन्)

Singular एकवचन	Dual द्विवचन	Plural बहुवचन	Case विभक्ति
शशी	शशिनौ	शशिन:	Nominative प्रथमा
शशिनम्	शशिनौ	शशिन:	Accusative द्वितीया
शशिना	शशिभ्याम्	शशिभि:	Instrumental तृतीया
शशिने	शशिभ्याम्	शशिभ्य:	Dative चतुर्थी
शशिन:	शशिभ्याम्	शशिभ्य:	Ablative पञ्चमी
शशिन:	शशिनो:	शशिनाम्	Genitive षष्ठी
शशिनि	शशिनो:	शशिषु	Locative सप्तमी
हे शशिन्	हे शशिनौ	हे शशिन:	Vocative संबोधन

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥

जिसके पास खुद की बुद्धी न हो, उसे शास्त्रों के पढ़ने से क्या लाभ होगा?

वैसे ही जैसे अन्धे इन्सान को दर्पण से कोई लाभ नही होता।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।

स हेतु: सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

जल की एक एक बूँद गिरने से कोई घट भी धीरे धीरे भर जाता है। वही

हेतु सारी विद्याओं के, धर्म के और धन के प्राप्ती में लगाया जाता है।

योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका।

अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

एक छोटी चींटी भी (अगर मन में ठान ले तो) हजार योजन अंतर पार कर जा

सकती है। किन्तु जाने की इच्छा न करनेवाला गरुड एक पद भी आगे नही

जाता।

काक: कृष्ण: पिक: कृष्ण: को भेद: पिककाकयो:।

वसन्तसमये प्राप्ते काक: काक: पिक: पिक: ॥

कौआ काला होता है, कोयल भी काली होती है। तो कौए और कोयल में

क्या भेद होगा? लेकिन वसंत ऋतु आनेपर ही कौए और कोयल का भेद पता

चलता है।

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।

कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद् धनम्॥

पुस्तक में ही रहने वाली विद्या और दूसरों के हाथों में गया हुआ अपना धन - ये

दोनों चीजें समय आने पर / जरूरत होने पर काम नही आती।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न हि मनोरथै:।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखं मृगाः॥

सारे कार्य उद्यम यानि प्रयत्न से साध्य होते हैं केवल मनोरथ से नही। जैसे सोए

हुए सिंह के मुख में कोई भी प्राणी स्वयं प्रवेश नही करता।

गजं नैव व्याघ्रं नैव सिंहं नैव च नैव च।

अजापुत्रं बलिं दद्यात् देवो दुर्बलघातक:॥

बली दिया जाने वाला प्राणी हाथी नही होता, बाघ नही होता या सिंह भी नही

होता। अजापुत्र यानि छाग (बकरा) का ही बली दिया जाता है। देव भी दुर्बलों

का ही घातक होता है।

उष्ट्राणां लग्नवेलायां गीतं गायन्ति गर्दभाः।

परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूपमहो ध्वनि:॥

ऊँटो के विवाह के समय गधे गीतगायन कर रहे हैं। वे दोनों एक दूसरे की प्रशंसा

कर रहे हैं कि - क्या रूप है! क्या आवाज है!

न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।

व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

विद्यारूपी धन सबसे प्रधान धन है। यह चुराया नही जा सकता। राजा उसका

अधिहरण नहीं कर सकता। ये धन बंधुओं में बाटा नहीं जाता। और न ही ये

भारकारी होता है। खर्च करने पर ये बढता ही जाता है, यह इसका वैशिष्ट्य है।

यस्तु सञ्चरते देशान् यस्तु सेवेत पण्डितान्।

तस्य विस्तारिता बुद्धिस्तैलबिन्दुरिवाम्भिस ॥

जो अनेक देशों में संचार करता है और विद्वज्जनों से मिलता है, उनके ज्ञान का

लाभ उठाता है; उस इन्सान की बुद्धी पानी पर गिरे तेल की बूँद की तरह

विस्तारित होती जाती है।

अव्यय Indeclinables

ये ऐसे शब्द हैं जो जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो उनमें कोई परिवर्तन नही होता। वे जैसे होते हैं, उसी तरह - उनके मूल स्वरूप में - प्रयुक्त किए जाते हैं। वे नाम / विशेषण / सर्वनाम के जैसे विभक्तियुक्त नही होते और न ही क्रियापद के जैसे कालार्थ प्रत्यय लेते हैं।

उदाहरणार्थ - अथवा, अधुना, अपि, अद्य, अन्यत्र, इतरत्र, एकत्र, एकदा, कदाचित्, कदापि, क्वचित्, न, नमः, परन्तु, पश्चात्, पुनः, प्रायः, बहुधा सदैव, सर्वत्र

अव्यय	अर्थ	विभक्ति	वाक्य
प्रति	की ओर / को	द्वितीया	शठं प्रति शाठ्यम्।
अभित: / परित:	चारों ओर	द्वितीया	शालाम् अभित: / परित: क्रीडाङ्गणं वर्तते।
निकषा / समया	समीप	द्वितीया	याचकं समया/ निकषा धनं न अस्ति।
अन्तरेण	बिना	द्वितीया	शकुन्तलाम् अन्तरेण तपोवनं शून्यम् अवर्तत।
धिक्	धिक्कार हो	द्वितीया	धिक् संसारस्य असारताम्।
सह	साथ	तृतीया	राम: लक्ष्मणेन सीतया च सह वनम् अगच्छत्।
बहि:	बाहर	पंचमी	गृहात् बहि: कूप: वर्तते।